

Exam. Code : 215501

Subject Code : 4128

## M.A. Sanskrit Semester—I

UPANISHAD AND YOGADARSHAN : SAMANYA  
PRICHAYA

## Course-III

Time Allowed—3 Hours] [Maximum Marks—100

नोट :— प्रत्येक उपनिषत् से दो मंत्रों की व्याख्या करना अनिवार्य है।

I. किन्हीं दो मंत्रों की व्याख्या करें :— 2×10=20

(क) तदेजति तन्नैजति तद् दूरे तद्वन्तिके।

तदन्तरस्य सर्वस्य तदु सर्वस्यास्य बाह्यतः॥

(ख) यस्मिन् सर्वाणिभूतानि आत्मैवाभूदविजानतः।

तत्रको मोहः कः शोकः एकत्वमनुपश्यतः॥

(ग) अन्धतमः प्रविशन्ति येऽसम्भूतिमुपोसते।

ततो भूय इव ते तमो याऽसम्भूत्यां रताः॥

(घ) वायुरनिलममृतमथेदं भस्मात्रं शरीरम्।

ओं क्रतो स्मर कृतं स्मर क्रतो स्मर कृतं स्मर॥

II. किन्हीं दो मंत्रों की व्याख्या कीजिए :— 2×10=20

(क) यच्चक्षुषा न पश्यति येन चक्षूंषि पश्यति।

तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि नेदं यदिदमुपासते॥

(ख) यस्यामतं तस्य मतं मतं यस्य न वेद सः।

अविज्ञातं विजानंता विज्ञातमविजानताम्॥

(ग) स तस्मिन्नेवाकाशे स्त्रियमाजगाम बहुशोभमात्मामुमां।

हैमवतीं तां होवाच किमेतत् यक्षम्॥

(घ) तस्यै तपो दमः कर्मेति प्रतिष्ठा वेदाः सर्वाङ्गानि सत्यमायतनम्॥

III. केवल दो मंत्रों की व्याख्या करना अभीष्ट है :—  $2 \times 10 = 20$

(क) अनुपश्य यथा पूर्वे प्रतिपश्य तथा परे।

सस्यमिव मर्त्यः पच्यते सस्यमिवाजायते पुनः।।

(ख) यस्मिन्नदं विचिकित्सन्ति मृत्यो यत्साम्पराये महति ब्रूहि नस्तत्।

योऽयं वरो गूढमनुप्रविष्टो नान्यं तस्मान्नचिकेता वृणीते।।

(ग) एतदालम्बनं श्रेष्ठमेतदालम्बनं परम्।

एतदालम्बनं ज्ञात्वा ब्रह्मलोके महीयते।।

(घ) ऊर्ध्वामूलोऽवाक्शाख एषोऽश्वस्थः सनातनः।

तदेव शुकं तद् ब्रह्म तदेवामृतमुच्यते।।

IV. दो ही प्रश्न उत्तर देने योग्य हैं :—  $2 \times 10 = 20$

(क) केनोपनिषत् का सार लिखें।

(ख) त्रिणाचिकेते अग्नि का वर्णन करें।

(ग) ऋत तथा सत्य में क्या अन्तर है ? स्पष्ट करें।

(घ) 'त्यागपूर्वक भोग' का तात्पर्यार्थ स्पष्ट करें।

V. कोई दो प्रश्न समाधान योग्य हैं :—  $2 \times 10 = 20$

(क) योग का स्वरूप लिखें।

(ख) षट्कर्म से क्या तात्पर्य है ?

(ग) मुद्रा के लाभ लिखें।

(घ) आधुनिक युग में उपर्युक्त उपनिषदों के महत्व पर प्रकाश डालें।